साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

सीताकांत महापात्र

SITAKANT MAHAPATRA

सीताकांत महापात्र

SITAKANT MAHAPATRA

सीताकांत महापात्र, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रदान कर रही है ओड़िया और अंग्रेज़ी के उत्कृष्ट भारतीय कवि एवं साहित्यिक समालोचक हैं।

डॉ. महापात्र का जन्म 1937 में हुआ। आपने उत्कल, इलाहबाद तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त की। आपने सामाजिक नृविज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आप दो वर्षों तक विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के पश्चात् 1961 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से जुड़े तथा इसके अंतर्गत आपने राज्य सरकार एवं भारत सरकार में कई महत्त्वपूर्ण पदों; जैसे– सचिव, संस्कृति मंत्रालय; सचिव, राजभाषा तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आप विश्व के दो प्रमुख विश्वविद्यालयों कैम्ब्रिज एवं हावर्ड के फ़ेलो भी रह चुके हैं। आप चार वर्षों तक होमी भाभा फ़ेलो भी रह चुके हैं।

डॉ. महापात्र के 21 कविता संकलन, साहित्य एवं संस्कृति से संबंधित 9 निबंध-संग्रह तथा 4 यात्रा संस्मरण प्रकाशित हो चुके हैं। आपको 1974 में आपके तृतीय कविता-संग्रह *शब्दर आकाश* के लिए ओड़िया भाषा के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रख्यात सामाजिक नृविज्ञानी डॉ. महापात्र ने भारतीय जनजाति कविता के 10 संकलनों का अनुवाद एवं संपादन किया है। यूनेस्को ने प्रतिनिधि कार्यों की शृंखला के अंतर्गत *दे सिंग लाइफ़* (2002) का प्रकाशन किया है। ओ.यू.पी. ने आपके भारतीय जनजाति समाज के परिवर्तन संबंधी दो प्रमुख कृतियों *मॉडर्नाइज़ेशन एंड रिचुअल* तथा *रेल्म ऑफ़ द सेक्रेड* का प्रकाशन किया है।

आपकी कल्पनाशक्ति एवं अंतर्दृष्टि के लिए उल्लेखनीय आपकी कविताएँ, जिनमें भारतीय तथा विदेशी मिथकों से आपने बहुत कुछ लिया है। आपका ध्यान आकर्षित करने वाला एक अन्य पक्ष है : विद्वत्ता का कोष। डॉ. महापात्र ने जो वैदुष्य अपनी कविताओं में दर्शाया है, उससे उन्हें आधुनिक भारतीय कवियों के बीच एक अनूठा स्थान प्राप्त है। आपकी कविताओं की एक अन्य विशेषता यह है कि मिथकों से लिए गए तथ्यों को आपने अपनी अंतर्दृष्टि एवं कल्पनाओं के साथ सराहनीय ढंग से प्रस्तुत किया है। व्यक्ति, समय, मृत्यु तथा उनसे परे जाना आपकी लोकप्रिय कविताओं की जीवनरेखा है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि

Dr. Sitakant Mahapatra, on whom Sahitya Akademi is conferring its Fellowship, is a prolific and outstanding Indian poet and literary critic in *Odia* and English.

Born in 1937, Dr. Mahapatra was educated in Utkal, Allahabad and Cambridge Universities. He holds a Doctorate in Social Anthropology. After two years of University teaching, he joined the Indian Administrative Service in 1961. In that capacity, he held several important posts, with the State Government as well as the Government of India, such as Secretary, Culture, Govt. of India; Secretary, Official Languages & Chairman, National Book Trust, India. He has been a fellow in Cambridge and Harvard, two premier universities in the world. He has also been a Homi Bhaba Fellow for 4 years.

Dr. Mahapatra has published 21 anthologies of poems, 9 collections of essays on literature and culture and 4 travelogues. His third collection of poetry, *Sabdara Akash* (Sky of Words) won the Sahitya Akademi Award for *Odia* in 1974. A prominent social anthropologist, Dr. Mahapatra has translated and edited 10 anthologies of Oral Poetry of Indian Tribes. The UNESCO, in its collection of Representative Works, has published one such anthology, *They Sing Life* (2002). OUP has published his two major works on the transformation of tribal societies of India, *Modernization and Ritual* and *Realm of the Sacred*.

Remarkable for imageries and insights, sometimes gleaned from the mythologies, both Indian and the world, his poems bear another striking aspect: fund of scholarship. This, the amount of scholarship that Dr. Mahapatra brought into his poetry, makes him very unique among the modern Indian poets. Yet another telling feature of his poems is that even when borrowed from the mythologies, the insights and imageries do not drown the phenomena in the noumena. The man, time, death and the attempts to transcend them are often the lifelines of his celebrated poems. It would

डॉ. महापात्र की कविताओं में दर्शायी गई समस्त खोजों, सांसरिक सीमाओं से परे जाने के प्रयासों में हमें नया तथा ओजपूर्ण स्वर एवं अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। डॉ. महापात्र की कविताएँ उत्कृष्ट आध्यात्मिक सिद्धांतों तथा सत्य को सहज सरल भाषा में अभिव्यक्त करती हैं जो साधारण आदमी की समझ में भी आ जाती हैं, जैसा कि आपकी कविता 'रिफ़्लेक्शन' की निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ने से प्रतीत होता है–

यथार्थ और प्रतिबिंब
दर्पण के दो पार्श्व हैं
एक का आलोक अश्रु लाता है
तथा दूसरे की परछाईं दर्द।

आपने समान रूप से जनजातीय कविता के क्षेत्र में भी सराहनीय योगदान किया है। डॉ. सीताकांत महापात्र पहले ऐसे भारतीय विचारक हैं, जिन्होंने जनजातीय साहित्य के साहित्यिक मूल्य को समझा। आप द्वारा संग्रहीत इन कविताओं के संकलन एवं अनुवाद अमूल्य एवं स्थायी महत्त्व के हैं। आप द्वारा जनजातीय समुदायों पर किए गए कार्य प्राचीन, रिवाज़ों पर आधारित समुदायों के संबंधों पर भी प्रकाश डालते हैं तथा आधुनिक राज्य द्वारा विकास कार्यक्रमों को भी दर्शाते हैं, किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपने इस प्रकार की पहलकदमी के असफल होने के वास्तविक कारणों पर प्रकाश डाला।

आपको कविता के लिए कई सम्मानों तथा पुरस्कारों से विभूषित किया गया जिनमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, सारळा पुरस्कार, गंगाधर मेहेर राष्ट्रीय पुरस्कार, जोशुआ साहित्य सम्मान, कबीर सम्मान, साहित्य भारती-सम्मान, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार तथा कुमारन आसान कविता पुरस्कार शामिल हैं। सन् 2003 में भारत के राष्ट्रपति ने आपको *पद्मभूषण* तथा 2010 में *पद्मविभूषण* से सम्मानित किया। तीन भारतीय विश्वविद्यालयों ने आपको डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया। सोका विश्वविद्यालय, टोकियो ने आपको एक विशेष दीक्षान्त समारोह में अपने सर्वोच्च सम्मान से अंलकृत किया।

डॉ. महापात्र कृत कविता-संकलनों के अनुवाद अधिकतर भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें 11 हिंदी, 4 पंजाबी, 3 मलयाळम् तथा 4 बाङ्ला एवं 4 उर्दू भाषाओं के संकलन शामिल हैं। इन संकलनों को अनूदित करने वाले अनुवादकों में से 5 अनुवादकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. महापात्र एकमात्र ऐसे भारतीय कवि हैं जिनके काव्य के अनुवाद के लिए पाँच प्रतिष्ठित अनुवादकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आपकी कविताओं के संकलन 14 ग़ैर भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रमुख यूरोपीय भाषाओं के अलावा आपकी रचनाएँ अरबी, हिब्रू, चीनी तथा जापानी भाषाओं में भी अनूदित हो चुकी हैं। अनुवादकों में प्रख्यात विद्वान तथा कवि जैसे–तान चुंग, औरेल कोवाचि, एरिक स्टिनस तथा जोजो बोस्कोवस्की आदि शामिल हैं।

be no exaggeration to say that all searches, attempts to transcend mundane limitations, nay, *elan vital* itself, found new and vigorous voice and expressions in Dr. Mahapatra's poems. Dr. Mahapatra's poems also espouse lofty metaphysical principles and truths in a simple, plain language that even a common man can connect to, as in the following few lines from his poem, *'Reflection'*.

The Reality and image
The two sides of a mirror
The light of one brings tears,
And the shadow of the other brings pain.

Equally seminal are his contributions in the field of tribal poetry. Dr. Sitakant Mahapatra was the first Indian thinker to realize the literary value of tribal literature. His collection and translation of these poems are invaluable and monumental. His works on the tribal societies also focus on the relationship between primitive, ritual based societies and the efforts of modern state to initiate development programmes in them, but most importantly throw light on plausible reasons for failure of such initiatives.

He has received several Honours and Awards for his poetry including *Sahitya Akademi Award, Bharatiya Jnanpith Award, Sarala Award, Gangadhar Meher National Award, Joshua Sahitya Samman, Kabir Samman, Sahitya Bharati Samman, Soviet Land Nehru Award* & *Kumaran Asan Poetry Award*. The President of India conferred on him *Padma Bhusan* in 2003 and *Padma Vibhusan* in 2010. Three Indian Universities have honoured him with honorary D.Litt. degrees. Soka University, Tokyo has conferred its Highest Honour in a Special Convocation.

Dr. Mahapatra's poem-anthologies in translation have been published in most of the Indian languages. There are eleven such anthologies in Hindi, four in Punjabi, three in Malayalam and four each in Bengali and Urdu. Five of those translators have received the Sahitya Akademi Award for Translation. Dr. Mahapatra is one of the few Indian poets, the translations of whose poetry have earned Sahitya Akademi's Translation Prizes to five eminent translators.

Anthologies of his poems have been published in 14 non-Indian languages. In addition to the major European languages, they have also been translated into Arabic, Hebrew, Chinese and Japanese. Among the translators are eminent scholars and poets like Tan Chung, Aurel Covaci, Erik Stinus and Jojo Boskovoski.

डॉ. महापात्र की कविताओं पर ओड़िया में सात शोध-कार्य हुए हैं। सातों में से दो लेखकों को डी.लिट. उपाधि और तीन को उनके कार्यों के लिए पी-एच.डी. उपाधियाँ प्रदान की गईं। डॉ. आर.एन.श्रीवास्तव ने हिन्दी में दो समालोचनात्मक कृतियाँ तथा राजशेखर नीरामानवी ने कन्नड में एक समालोचनात्मक कृति लिखी है। सूरा पी.रथ द्वारा संपादित एक प्रमुख कृति *सीताकांत महापात्र : द माइथोग्राफर ऑफ़ टाइम* का भी प्रकाशन हो चुका है। दो अन्य विद्वानों ने *डॉ. महापात्र और श्री अज्ञेय के काव्य के मिथकों का तुलनात्मक अध्ययन* तथा *रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा सीताकांत महापात्र की कविता* में प्रार्थना के स्वर विषयों पर अपनी पी-एच.डी. की।

आपकी *जरा, कुब्जा* और *यशोदा* पर लिखित तीन कविताओं को सोनल मानसिंह ने ओड़िसी नृत्य शैली में प्रस्तुत किया। शोभना नारायण तथा प्रतिभा प्रह्लाद ने कथक एवं भरतनाट्यम शैलियों में *यशोदा* कविता पर *जुगलबंदी* प्रस्तुत की। डॉ. कनक रेले ने *मोहिनीअट्टम* शैली में *कुब्जा* नृत्य प्रस्तुति की।

आपके जीवन और कविताओं पर आधारित वृत्तचित्रों का निर्माण साहित्य अकादेमी, फ़िल्म्स डिवीज़न ऑफ़ इंडिया तथा भारतीय ज्ञानपीठ ने किया है। रामोजी फ़िल्म्स ने अपनी मार्गदर्शी श्रृंखला के अंतर्गत आपके हिन्दी एवं तेलुगु कविता पर आधारित दो वृत्तचित्रों का निर्माण किया है।

डॉ. महापात्र ने कई भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों में नृविज्ञान के विकास एवं साहित्य पर व्याख्यान दिए हैं तथा कविता-पाठ किया है, जिनमें हार्वर्ड, शिकागो, बर्मिंघम, सोका विश्वविद्यालय टोकियो, स्त्रुगा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन (1975 एवं 1983), लेनिनग्राड, बैंकॉक, मॉस्को, पैरिस तथा स्टॉकहोम विश्वविद्यालय शामिल हैं। आपने कला और साहित्य विषयक कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की भी अध्यक्षता की।

सीताकांत महापात्र को उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

Seven book-length studies of Dr. Mahapatra's poetry are available in *Odia*. Of those seven, two studies have earned the authors D.Litt. degrees, three others doctoral degrees for the authors. There have been two critical works in Hindi, both by Dr. R.N. Srivastava and one in Kannada by Dr. Rajasekhar Neeramanvi. A major work titled *Sitakant Mahapatra: The Mythographer of Time* edited by Sura P. Rath has also been published. Two other scholars have worked for their Ph.D. - one on the comparative study of *Mythology in the Poetry of Dr. Mahapatra and Sri Agneya*; the second on the theme '*The Voice of Prayer in the Poetry of Rabindranath Tagore and Sitakant Mahapatra*'.

Three of his poems on *Jara, Kubja* and *Yashoda* have been performed in *Odissi* dance style by Sonal Mansingh. A *Jugalbandi* of the poem on *Yashoda* has been rendered in both *Kathak* and *Bharatnatyam* styles by Shovana Narayan and Prativa Prahalad. Dr. Kanak Rele has danced the song on *Kubja* in *Mohiniattam* style.

Documentary films on his life and poetry have been produced by Sahitya Akademi, Films Division of India and Jnanpith of India. Ramoji Films have produced two documentaries on his poetry in Hindi and Telugu in their series *Margadarshi*.

Dr. Mahapatra has lectured extensively on Development Anthropology and Literature and read his poems in several Universities in India and abroad including Harvard, Chicago, Birmingham; Soka University, Tokyo; International Poetry Conference at Struga (1975 & 1983), Universities of Leningrad, Bangkok, Moscow, Paris and Stockholm. He has also presided over several International Conferences on Art and Literature.

Sahitya Akademi is extremely proud to confer its highest honor of Fellowship on Dr. Sitakant Mahapatra.

स्वीकृति वक्तव्य

मैं साहित्य अकादेमी के प्रति आभारी हूँ कि अपनी महत्तर सदस्यता से मुझे सम्मानित कर रही है। मुझे इस बात का हर्ष है कि यह सम्मान मेरी भाषा को मिला है, जिसकी एक समृद्ध विरासत है। इसकी शास्त्रीय स्थिति को लेकर कोई संशय नहीं रहा, लेकिन इसे नि:संदेह देर से मान्यता मिली। इसका साहित्यिक विकास सदियों से निरंतर जारी है जिसने कई मनीषियों को जन्म दिया। इस पवित्र परंपरा का लाभार्थी, मैं यह महत्तर सदस्यता अपने दो काव्य गुरुओं को समर्पित करता हूँ। प्रथम गुरु हैं ओड़िया भागवत्कार जगन्नाथ दास, जिनमें अनूठी गीतात्मकता के साथ गहन दार्शनिक जिज्ञासा है; दूसरे हैं भीमा भोई जो एक जनजातीय कवि हैं जिनमें अनूठी सामर्थ्य के साथ विश्वभर में व्याप्त असमानताओं के प्रति क्रोध तथा स्व मुक्ति की खोज के तत्व विद्यमान थे।

मैं अपनी खुशी अपने अनगिनत प्रिय पाठकों (जो मेरे कार्यों को पसंद करते हैं) तथा विभिन्न पीढ़ियों के अपने लेखक मित्रों के साथ साझा करता हूँ। मुझे और अधिक प्रसन्नता होती यदि यह महत्तर सदस्यता *डोमाटी* उपन्यास के महान रचनाकार को पहले प्रदान की जाती, जिनका शतायु में निधन हुआ।

जब मुझे 1993 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ, तब नामवर सिंह जी ने मेरे वृहद कविता-संग्रह *तीस कविता वर्ष* के हिन्दी अनुवाद का संपादन किया था। आज मैं पाता हूँ कि आधी सदी गुज़र गई जबकि मैंने कविता—लेखन में दिलचस्पी लेना प्रारंभ किया था तथा साहित्य की अन्य विधाओं में भी आपने हाथ आज़माने के प्रयास किए थे।

इस बीच में मेरे काव्यात्मक मिज़ाज़ में बदलाव आया है, मेरे आस-पास के जीवन एवं समाज में भी बदलाव आया है तथा कई पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं। मैं समझता हूँ कि एक बात निरंतर मेरे साथ रही है। मैंने पूर्ण निष्ठा के साथ, जैसा मैंने जीवन जिया है उसे कविता में जीने का तथा अपना हिस्सा बनाने का निरंतर प्रयास किया है।

सीमस हिने ने एक बार कहा था कि हम मृत्यु के बाद जीवन की बात करते हैं, किन्तु हमें मूलत: अपने जीवन में ही मृत्यु के लिए सजग रहना चाहिए। मैं अपनी जीवन यात्रा तथा इसमें आने वाले कठोर समय के हर्ष एवं विषादों के साथ निरंतर समझौते करता आ रहा हूँ।

प्रत्येक गंभीर कवि भाषा की शुद्धता की खोज में रहता है, एक ऐसी भाषा जो दोहरे उद्देश्य को व्यक्त करने में सक्षम हो जो स्वयं को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ हमारा स्वयं से भी साक्षात्कार कराए। उसकी निष्कपट प्रार्थना यह होगी कि वह भाषा को उसके समस्त प्रारंभिक प्रश्नों और उत्तर की ओर ले जाए, यथा :

Acceptance Speech

I am thankful to the Sahitya Akademi for the award of its Fellowship to me. I am happy it has come to my language which has a very rich ancestry. Its classical status which had never been doubt was recognized rather late in the day. The literary development has been continuous for centuries producing many stalwarts. Beneficiary of its hallowed tradition, I dedicate this Fellowship to my twin Kavya Gurus, the Odia Bhagabatkar Jagannath Das, who combined intense philosophical quest with rare lyricism and Bhima Bhoi, the tribal Poet in whom anger against the inequities of the world and the search for personal redemption were fused with rare competence.

I share my happiness with the countless loving readers of my works and my writer-friends of different generations. I would have been happier if the fellowship had gone earlier to the great creator of the novel *Hidamati*, who passed away as a centenarian.

When I received the Jnanpith Award in 1993, Namwar Singhji edited a fairly comprehensive selection of my poetry in Hindi translation and named it *Tees Kavita Varsha*. Today I realize half a century has passed since I started dabbling in poetry and also tried my hands in other genres of literature.

Meanwhile my poetic persona has changed, life and society around has changed and generations have passed. I feel one thing has remained constant for me. I have written with perfect honesty as I have lived, with my never-ceasing efforts to live in poetry and make it a part of my Being.

Seamus Hiney once observed that we speak of life after death, but we should be more fundamentally concerned about life before death. I have been on a ceaseless negotiation with life and all the joys and sorrows it offers with the relentless passage of time.

Every sincere poet is ever on the search for the purity of the language, a language that can partake of the dual purpose of reaching out to the core of one's being and providing, at the same time, a meeting ground with other selves. His honest prayer is to take the language to the beginning of all questions and answers so that:

प्रत्येक बालक को उसका खिलौना मिले
समय को उसका पुरोधा
प्रत्येक वृद्ध व्यक्ति का स्वप्न पूरा हो
प्रत्येक व्यक्ति की प्यास बुझे
प्रत्येक भटके पक्षी को
मिले उसका गीत और आसमान।

(प्रार्थना)

चाहे हम कितने भी एकाकी क्यों न हों, यह दुनिया हमारी कल्पना के लिए प्रस्तुत है। हम जीवन के लिए जाले नहीं बुनते। हम इसमें मात्र एक रेशे के समान हैं। यह मुझे स्मरण कराती है कि मैं सिर्फ़ इंसानी परिवार का ही हिस्सा नहीं हूँ, वरन् समस्त ईश्वरीय सृष्टि का अंग हूँ। मैं उन सभी से पूछता हूँ कि, 'तुम मुझे अपनी निराशा, प्रेम और कष्टों के बारे में बताओ मैं तुम्हें ईमानदारी से अपना हाल सुनाऊँगा।' विलियम लोगन ने हमें यह अविस्मरणीय शब्द कहे हैं, — ''तुम यह कभी मत सोचना कि तुम्हीं एक घटिया आदमी हो जिसने कष्टों को सहा है— तुम सिर्फ़ वो ही लिखो जो तुम कहना चाहते हो।''

कभी-कभी मुझे लगता है कि वर्तमान कविता में हमारे अतीत और उसकी स्मृतियों की संवेदना का अभाव है। नि:संदेह मैं वर्तमानकाल को देखता हूँ, आख़िरकार जहाँ हम रहते हैं। मुझे इसके विक्षोभ, निराशा, क्रोध एवं स्वप्नों का आभास है। मैंने अतीत झाँक कर देखा है कि क्या वहाँ सब कुछ ठीक था। धरती के भीतर दफ़न मेरे पूर्वजों की हड्डियों को नींबू के पेड़ की जड़ें छू रही हैं। मेरी दादी की स्मृतियाँ उड़ते बादलों की परछाईं की भाँति हैं, जो मेरे पूर्वजों की इस भूमि पर एक लम्बी ऐतिहासिक यात्रा पर है।

भाषा एक ऐसा ज़रिया होना चाहिए, जिससे हम अपने अतीत से जुड़ सकें तथा जो एक अशांत ध्वस्त विश्व को कोमलतापूर्वक प्रभावशाली ढंग से व्यवस्थित करने में सक्षम हो। किन्तु भाषा की समृद्धि को बरक़रार रखने में हमें स्वयं को खोने का खतरा है, इस बात को भुलाते हुए कि कविता की सर्वश्रेष्ठ शक्ति उसके अर्थ की खोज में है, जो दोनों वर्तमान पक्षपातों तथा दुर्भाग्यपूर्ण ढाँचे की चुनौतियों का सामना भाषा की समृद्धि तथा हमारे सरोकारों, क्रोध तथा वेदना जैसी गहन अर्थवाली अभिव्यक्ति में भ्रम उत्पन्न होना सहज है।

मैं जीवन से बहुत प्यार करता हूँ तथा मुझे इसको अभिव्यक्त करने की हज़ारों विधियाँ पता हैं। मैं बहती नदी हूँ, ध्यानस्थ पर्वत हूँ तथा समस्त प्राणियों के समान कष्ट सहता हूँ। मैंने उनके कष्टों को सहने तथा कभी भी जीवन से विमुख न होने की प्रवृत्ति की सराहना की है। मैं प्रकृति को एक पृथक तत्त्व के रूप में प्रेम नहीं करता। मैं प्रकृति हूँ और उसकी ध्वनियाँ मेरे भीतर हैं।

मैंने मृत्यु का भी सामना किया है तथा जानता हूँ कि वह कई प्रकार से आकर हमें दबोचती है। मैंने इसको अपने एक शत्रु के रूप में देखा, जब मेरे पिता मौत से जूझ रहे थे। मैंने यह महसूस किया है कि वस्तुत:

Each child gets his toy
time its legends
each old man his dream
each swallow its drop of rain
each errant bird
its song and the sky.
(Invocation)

No matter how lonely, the world lovingly offers itself to our imagination. We did not weave its web of life. We are merely a strand in it. It reminds me that I am in a family not only of men, but all creations of God. I ask all of them: 'tell me your despairs, loves and sufferings and I will honestly tell you mine'. William Logan has reminded us in inimitable words: "don't think you are the only bastard who ever suffered ___ just write as if you were".

Sometimes I feel in today's poetry a lack of the sense of the past and its memories. No doubt I look at the present, where after all we live. I am deeply aware of its *turbulence*, its frustrations, its anger and its dreams. I have looked at the past seeking to find in it some *order*. A Lemon tree meets my great-grandfather's bone-relics deep underneath the soil. My grandmother's memory is the shadow of a cloud floating across this land of my ancestors in its long journey through history.

Language has to be after all, a way of reconnecting with the past and delicately piecing together a shattered world view imposing some order on its turbulence. But there is a risk of our losing ourselves in the luxury of language forgetting that poetry's ultimate power, both to challenge the inequities of the present and to console the unfortunates, lies in its quest for meaning. It is easy to mistake the luxury of language and its confusion for some deeper meaning expressing our concerns, anger and anguish.

I am deeply in love with life and know the myriad ways my love for it has tried to express itself. I am the flowing river, the meditating mountain and all men who suffer. I have admired their courage in facing suffering and not to turn back on life. I do not love nature as a separate entity. I am nature and its rhythms are within me.

I have also faced death and know it arrives in several garbs. I have encountered it as an enemy while keeping watch on my dying father on the hospital bed. I have realized that it is my co-brother born from my mother's womb together and all my life it is getting me ready to finally part, holding its hand to its kingdom of darkness. I am deeply aware, however, that perhaps

यह मेरा भाई है जिसने मेरी माता के गर्भ से मेरे साथ ही जन्म लिया है तथा जीवनभर मेरा हाथ पकड़े यह मुझे अपने अँधेरे साम्राज्य में ले जाने के लिए तैयार कर रहा है। मुझे इस बात का गहन आभास है कि यद्यपि मेरा जीवन से प्रेम किसी न किसी रूप में मेरी मृत्यु के आभास से जुड़ा हुआ है। मुझे यह लगता है कि यह दोनों एक ही माला में गुँथे हुए हैं।

मैंने अपनी *वर्ड्स* नामक कविता की निम्नांकित पंक्तियों द्वारा शब्दों और भाषा के संबंध को समझाने का प्रयास किया है :—

मेरे शब्द भ्रमित बुलबुल की भाँति हैं
वसंत के अंत में अर्ध-लुप्त, अर्ध निष्प्राण गीत
मेरी भाषा गूँगे - बहरे नवजात शिशु के हाथों सी है
जो सदैव देवदूतों के अनजान ठिकानों
की ओर फैली रहती हैं,
सूरज की तपिश से पृथ्वी के चेहरे पर
झलकता उसके क्रंदन का उभार।

मैं एक बार पुन: साहित्य अकादेमी का मुझे महत्तर सदस्यता प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे व्याख्यान को धैर्यपूर्वक सुनने के लिए मैं आप सबका धन्यवाद करता हूँ।

सीताकांत महापात्र

my intense love for life is somehow connected to my awareness of death. I feel they are woven together as in a garland.

I have tried to spell out my relationship to words and language as in the following stanza from my poem *Words*:

My words are the confused nightingale's
half-lost, half-dead song at spring's end;
my language is the deaf-mute infant's hands,
eternally outstretched toward the angels'
unknown quarters; its cry embossed
on the earth's sun-baked face.

Once again I convey my gratitude to the Sahitya Akademi for conferring its Fellowship on me. I thank you all for your patient hearing.

Sitakant Mahapatra